रमन की पतंग

रमन के पड़ोस में एक मैदान था। बच्चे वहाँ खेलते और पतंग उड़ाते। रमन का मन भी पतंग उड़ाने को हुआ। उसने पिता जी से कहा। पिता जी बोले – बेटा अभी तुम बहुत छोटे हो। जब बड़े हो जाओगे, तब पतंग उड़ाना।

कई दिनों बाद रमन ने फिर ज़िद की। वह बोला – एक पतंग दिला दो न पिता जी। पिता जी ने कहा– दिलाने से अच्छा है कि हम मिलकर पतंग बनाएँ। फिर वह बाज़ार से रंगीन काग़ज़ ले आए। रमन पिता जी के सामने पालथी मारकर बैठ गया। पिता जी ने उसके लिए सुंदर पतंग बनाई। रमन बहुत ख़ुश हुआ। उसे तो आज पतंग उड़ाने से कहीं अच्छा लगा पिता जी के साथ मिलकर पतंग बनाना।

Writer : Saumitro

Illustrator : Habib Ali

Writer : Manish Kumar, Rampur

बर्फ़ या बादल

एक दिन आरती अपने घर की छत पर खेल रही थी। ऊपर आकाश बादलों से भरा हुआ था। आरती बहुत देर तक आकाश की ओर देखती रही। शाम में उसने अपने माता–पिता से पूछा– क्या आकाश में बर्फ़ है?

पिता जी ने हँसते हुए पूछा– तुम ऐसा क्यों सोचती हो?

आरती ने जवाब दिया– क्योंकि बादल बर्फ़ की तरह दिखते हैं।

माँ ने समझाया– काले बादल बारिश के बादल हैं। जब पानी से भाप बन जाते हैं तब यह सफ़ेद दिखते हैं। कुछ बादल तो मशरूम या गोभी जैसे भी दिखते हैं।

अगले दिन आरती ने अपनी सहेलियों को अलग–अलग तरह के बादलों के बारे में बताया। सारे दोस्तों ने उसकी ख़ूब तारीफ़ की।

Writer : Manprit Kaur
Translate : Saira Bano
Illustrator : Partho Sen Gupta

लाल लिली

मैं और मीठी बहुत दिनों से घर में रह रहे हैं। मीठी जब छोटी थी, तब हम दोनों रोज़ एक साथ घूमने जाते थे।

एक दिन मीठी की नटखट बिल्ली ने मेरे पेट को फाड़ दिया! उस दिन मीठी बहुत रोई। उसे लगा कि मैं तो मर ही गई। तब माँ ने मेरे पेट में रुई भर दी। उन्होंने धागे से मेरा पेट सिल दिया।

मैं पहले जैसी हो गई। यह देखकर मीठी को बहुत मज़ा आया। उसने मेरे शरीर पर काले और पीले रंग की धारीदार पट्टियाँ लगा दीं। उसने बड़े प्यार–से लाल रंग से रंग दिया। उस दिन से सभी मुझे लाल लिली कहकर बुलाने लगे। यह नया नाम तो मुझे कमाल का लगा...ह ह ह ह!

Writer : Malini Mukherjee Translation : Soumitra, Saira Illustrator : Hariom Patidar

चिपकी

बेला मुझे बहुत प्यार करती है। मेरी उससे रोज़ मुलाक़ात होती है। जब वह रात में पढ़ाई के लिए बैठती है, तो मुझे बहुत अच्छा लगता है।

रात में मेरे खाने का समय होता है। मैं दीवारों पर लपक–लपक कर कीड़े–मकोड़े खाती रहती हूँ। मैं बहुत से मच्छर भी निगल लेती हूँ। ताकि बेला मच्छरों की खुजलाहट से बची रहे। जब मेरा पेट भर जाता है तो चुपचाप एक कोने में चिपक जाती हूँ।

रात का खाना खाने के बाद बेला के पापा उसे गणित के सवाल हल करने को देते हैं।

बेला जब सवालों के सही जवाब देती है, तब बोल देती हूँ, "ठीक है, ठीक है... ।''

और जब ग़लत जवाब देती है तब...? नहीं– नहीं, ये मैं नहीं बताऊँगी! बेला आख़िर दोस्त है मेरी...!"

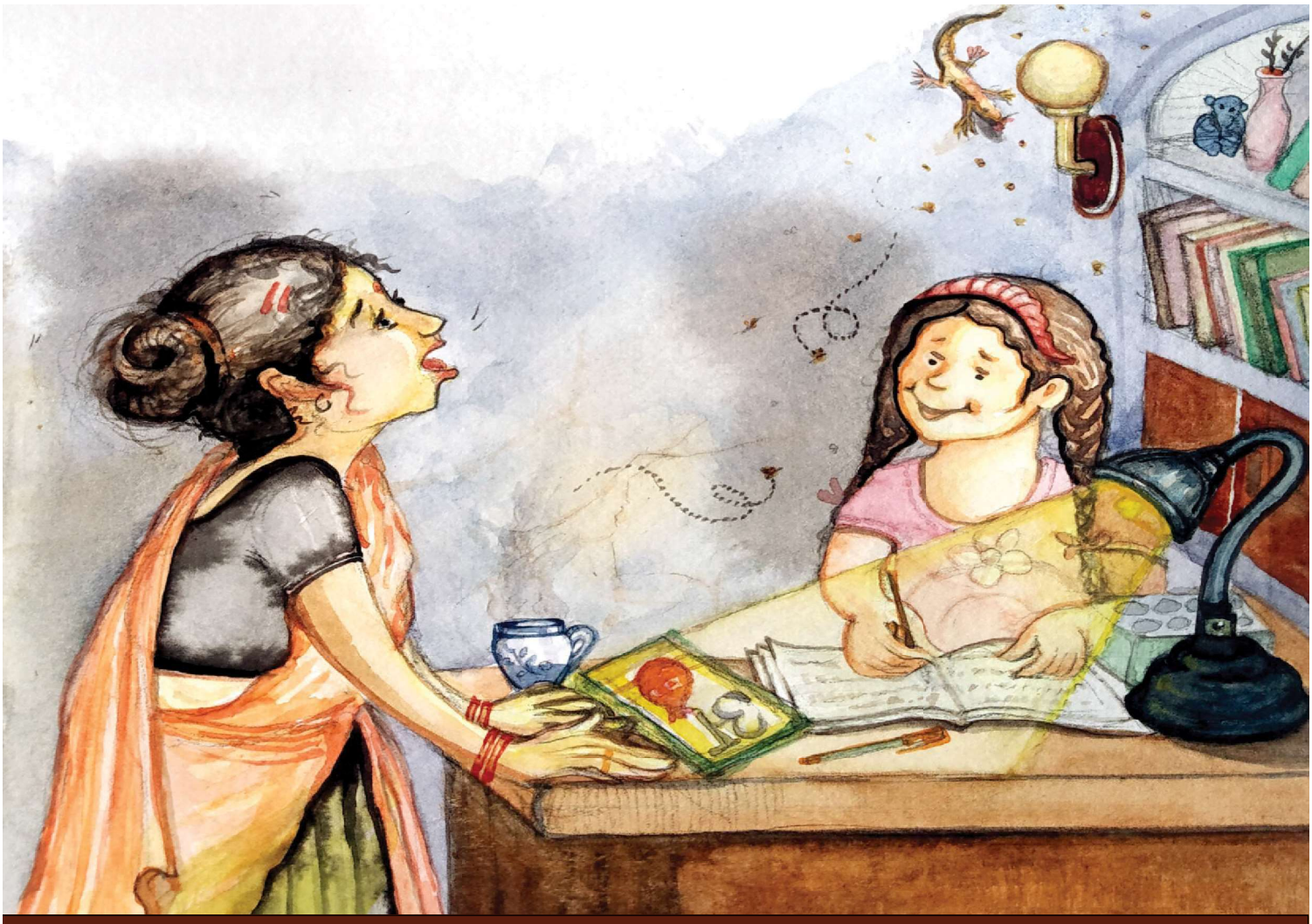

Writer : Malini Mukherjee Translation : Soumitra, Saira Illustrator : Hariom Patidar

मालू और कालू

एक दिन की बात है। ठण्ड बहुत थी। मैं ठिठुर रहा था। मालू मुझे अपने घर ले आया। मेरे शरीर पर मिट्टी लगी हुई थी। उसने मुझे गर्म पानी से नहलाया। फिर खाने के लिए दूध और चावल दिए। मैं प्यार–से बोल उठा, "कूँ...कूँ... ।" मुझे टहलना बहुत पसंद है।

एक दिन मालू मुझे खेत पर ले गया। वहाँ मैंने ख़ूब दौड़ लगाई। मुझे बहुत मज़ा आया। अब मालू और मैं रोज़ शाम को घूमने जाते हैं। वहाँ हम दोनों ख़ूब खेलते हैं। सभी हम दोनों को मालू और कालू कहकर बुलाते हैं। मेरी तो एक दुम है, लेकिन मालू की एक भी नहीं है? आख़िर उसकी दुम कब निकलेगी...? शायद बड़े होने पर...?

Writer : Malini Mukherjee
Translation : Soumitra, Saira
Illustrator : Susanta Das

घात लगाए बैठी

चूहे उछल–कूद कर रहे थे। उनकी मौज–मस्ती चल रही थी। तभी अचानक आवाज़ आई– ''म्याऊँ–म्याऊँ!'' सभी डर गए। जो जहाँ थे, वहीं दुबक गए। बिल्ली उनकी ताक में थी। जहाँ चूहों का बिल था, वहाँ पर एक लंबी–चौड़ी दीवार थी।

चूहों ने समझदारी से काम लिया। वे चुपके–चुपके बिल बनाने लगे। बिल्ली बहुत देर तक घात लगाए बैठी रही, पर चूहे नहीं निकले। वह वहीं पर बैठी–बैठी ऊँघने लगी।

इधर चूहों का दूसरा बिल तैयार हो चुका था। वे दीवार के उस ओर जा चुके थे। उनकी मौज–मस्ती भी शुरू हो गई थी। बेचारी बिल्ली घात लगाए बैठी देखती रह गई।

Writer : Sonia

Illustrator : Mitrarun Halder

उड़ते फूल

सीमा अपने दादा जी के साथ बग़ीचे में घूम रही थी। बग़ीचे में रंग–बिरंगे फूल खिले हुए थे। उन पर तितलियाँ मँडरा रही थीं।

अचानक! सीमा रंग–बिरंगे फूल को छूने के लिए आगे बढ़ी। सारी तितलियाँ उड़ गईं। सीमा चिल्लाई – दादा जी सारे फूल उड़ रहे हैं। दादा जी हँसते हुए बोले – सही कहा, ये फूलों के फूल हैं। तितलियों से फूल हैं। फूलों से तितलियाँ हैं। इनसे दोस्ती करना आसान नहीं है। इन्हें छूने से अच्छा है, हम इन्हें देखते रहें।

सीमा तितलियों को उड़ता हुआ देखकर तालियाँ बजा रही थी। वह बार–बार एक ही बात कह रही थी– उड़ने वाले फूल! रंग–बिरंगे फूल!

Writer : Bhup Singh Bagpat

Illustrator : Subham Lakhera

ख़ुशी मेले गई

ख़ुशी मेला देखना चाहती थी। माँ उसे मेला दिखाने ले गईं। मेले में बहुत–सी दुकानें सजी हुई थीं। अलग–अलग तरह के पकवानों की ख़ुशबू चारों ओर फैल रही थी।

ख़ुशी ने रंग–बिरंगी चूड़ियाँ, किताबें, खेलने के सामान, मिट्टी के खिलौने और मोतियों की मालाएँ भी देखीं।

ख़ुशी ने कई तरह के झूले भी झूले। तभी उसकी नज़र एक दुकान पर पड़ी। उस दुकान पर पीले–पीले आम सजे हुए थे। दोनों ने एक–एक गिलास मैंगो शेक पिया। फिर घर के लिए कुछ ज़रूरी सामान ख़रीदकर माँ और ख़ुशी वापस लौट आईं।

आज ख़ुशी का मन गद्‌गद था।

Writer : Vimal Kumar Patel

Illustrator : Subham Lakhera

खीर

बरसात का दिन था। रीना घर में खेल रही थी। खेलते–खेलते उसे भूख लगी। उसने पापा से कहा – मुझे भूख लगी है। आज मेरा खीर खाने का मन है, लेकिन मम्मी तो नानी के घर गई हैं। पापा रीना के क़रीब आए, उसकी आँखों में आँखें डालकर बोले – कोई बात नहीं, तुम्हारे पापा तो यहीं हैं न। रीना ने हैरानी से पूछा– आप और खीर!

पापा ने जवाब दिया– मैं नहीं, हम दोनों मिलकर खीर बनाएँगे।

रीना बोली– पर मुझे तो बनानी नहीं आती। पापा मुस्कराते हुए बोले– तो आज आ जाएगी। दोनों रसोई में गए। रीना ने चावल और चीनी निकाली। पापा ने खीर चढ़ाई। रीना ने खीर में बादाम, किशमिश और काजू मिलाए। दोनों ने खीर बनाई फिर जमकर खीर खाई।

रीना बोली – वाह पापा! मज़ा आ गया। काश! मम्मी भी यहीं होतीं तो और मज़ा आता!

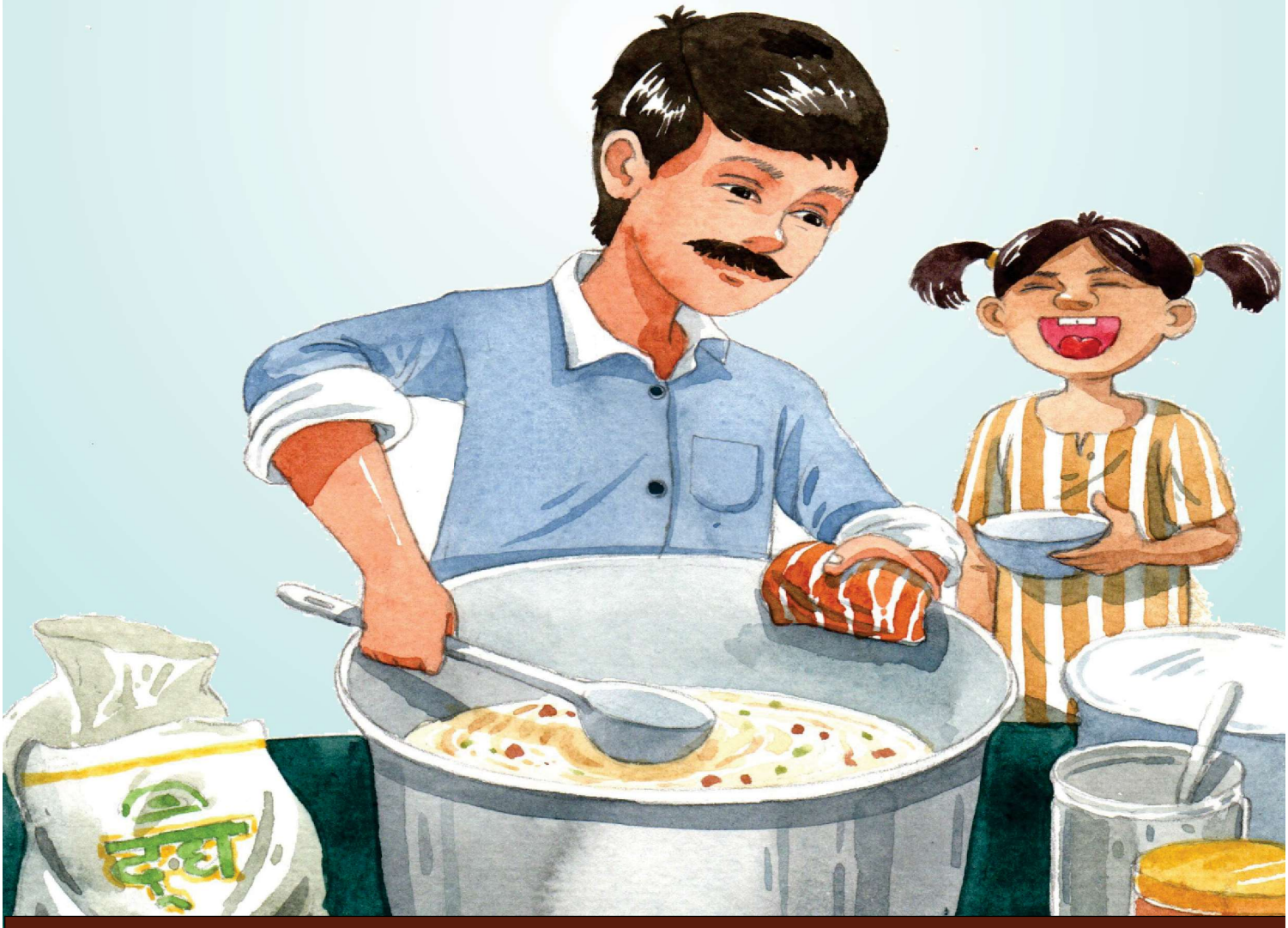

Writer : Shabana Parveen

Illustrator : Subham Lakhera

गाय और बछड़ा

इशरत के घर में एक गाय है। उसका नाम कजरी है। कजरी का एक बछड़ा है। इशरत ने उसे अपना दोस्त बना लिया है। एक दिन इशरत ने पूछा– माँ, क्या मैं इसे घास चराने बाहर ले जाऊँ?

माँ ने समझाया– अभी यह छोटा है। अभी यह माँ का दूध ही पिएगा।

एक दिन इशरत बछड़े को बाहर ले गई। वह उसे अपने दोस्तों से मिलवाना चाहती थी। इशरत और उसके दोस्त बछड़े के साथ खेलने लगे। शाम हो गई। कजरी रँभाने लगी। इशरत और बछड़े को न देखकर सब परेशान हो गए। बछड़ा भी थक गया था। उसे भूख लगने लगी थी। वह 'बाँ–बाँ' करके चिल्लाने लगा। इशरत उसे घर लेकर आ गई। बछड़ा भागकर अपनी माँ से लिपट गया और दूध पीने लगा। इशरत ने कहा– अब मैं तुम्हें ज़्यादा देर के लिए बाहर नहीं ले जाऊँगी, तुम्हें भूख लग जाती है न!

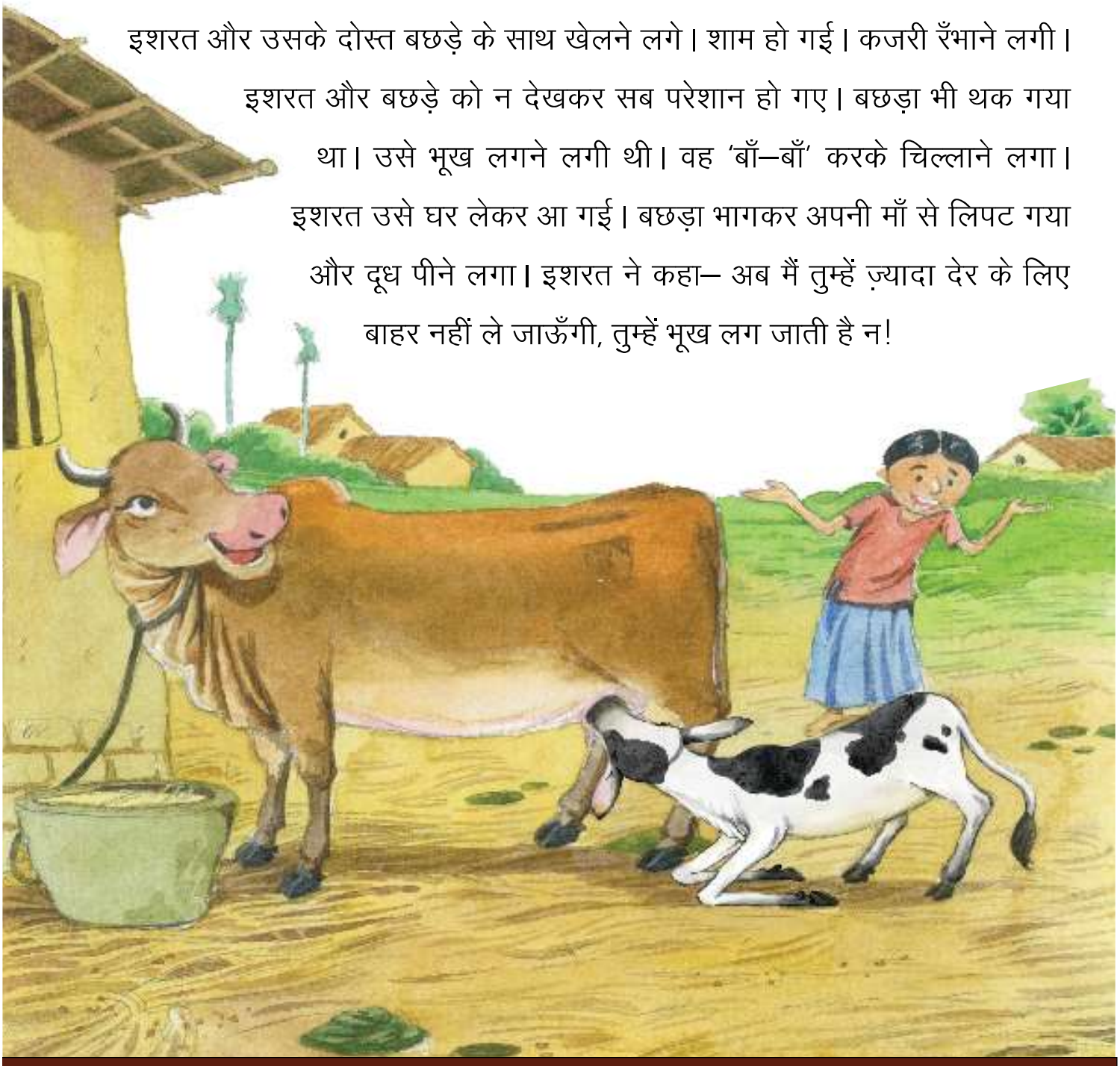

Writer : Pradeep Kumar

Illustrator : Habib Ali

टिफ़िन बॉक्स

पिंकू मुझे बहुत प्यार करती है। जब वह स्कूल जाती है, तब उसकी मम्मी मेरे पेट में पूड़ी और आलू की सब्ज़ी, रोटी और गुड़ रख देती हैं। कभी–कभी नारियल के लड्डू भी रख देती हैं। ये सब पिंकू को बहुत पसंद है।

स्कूल में मेरे और भी दोस्त हैं। लंच के समय सभी के पेट में मज़ेदार और लज़ीज़ खाना होता है, जिसे पिंकू के दोस्त मिलजुल कर खाते हैं।

घर लौटते समय पिंकू कभी–कभी मेरे पेट में कंकड़, फूल, पत्ते और टिड्डे भर लाती है, जिसकी वजह से मुझे बहुत गुदगुदी होती है।

पर आजकल मैं बहुत उदास हूँ! पिंकू की मम्मी ने बहुत दिनों से मेरे पेट में खाने–पीने का कोई भी सामान नहीं रखा! अब मेरे पेट में सिर्फ़ पेंसिल, रबड़, कटर और रंग ही होते हैं।

आजकल मैं पिंकू के साथ स्कूल भी नहीं जाता... लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि जल्द ही स्कूल खुलेंगे और फिर से मेरा पेट लज़ीज़ पकवान से भरा होगा।

Writer : Malini Mukherjee
Translation : Soumitra, Saira
Illustrator : Hariom Patidar

भूत मेरी मुट्ठी में

चमकू मेरा सबसे अच्छा दोस्त है। वह अक्सर मेरे साथ ही रहता है। एक दिन चमकू के मामाजी मुझे यहाँ लाए थे। तब चमकू बहुत ख़ुश हुआ था। उस दिन से चमकू मुझे साथ–साथ रखता है।

एक मज़े की बात बताऊँ! चमकू मेरे शरीर पर रोज़ एक चित्र बनाता है। कभी पहाड़ का, कभी कुल्फ़ी का। कभी नदी, फूल और कभी–कभी मम्मी–पापा का।

एक दिन चमकू ने मेरे शरीर पर काले रंग से एक भूत का चित्र बनाया। उस रात भूत चमकू के सपने में आया। चमकू ने भूत को बड़ी–सी कुल्फ़ी खिलाई। नदी का पानी पिलाया और पहाड़ों की सैर भी कराई। अगले दिन चमकू ने ये सब मुझे बताया।

चमकू मुझे अपने साथ सपने में नहीं ले गया। मुझे बहुत ग़ुस्सा आया। मैंने अपनी मुट्ठी बंद कर ली। अब भूत मेरे रंगीन पन्नों में क़ैद हो गया है।

Writer : Malini Mukherjee
Translation : Soumitra, Saira
Illustrator : Hariom Patidar

रेहान का सवाल

हमें अपने से बड़ों को हमेशा 'आप' कहकर बोलना चाहिए।

पापा हमेशा रेहान को यही बात समझाते रहते। मगर वह समझ नहीं पाता कि किसको 'आप' बोलना है और किसको 'तुम'? वह अपने मम्मी–पापा से भी 'आप' करके बात नहीं करता था। वह हमेशा सोचता रहता कि मम्मी–पापा से वह 'आप' कहकर बात करेगा, तो ऐसा लगेगा कि वे दूर के किसी रिश्तेदार से बातें कर रहा है।

एक बार की बात है। रेहान के घर के दरवाज़े पर एक बुज़ुर्ग खड़े थे। वह अगरबत्ती बेच रहे थे। वह पापा से पूछ रहे थे– क्या आप अगरबत्ती ख़रीदेंगे?

पापा ने कहा– हमें अगरबत्ती नहीं चाहिए। तुम कहीं और जाकर अपनी अगरबत्ती बेचो। रेहान को यह बात समझ में नहीं आई कि बुज़ुर्ग तो पापा से उम्र में बड़े हैं। फिर उन्होंने उनसे 'आप' करके बात क्यों नहीं की...?

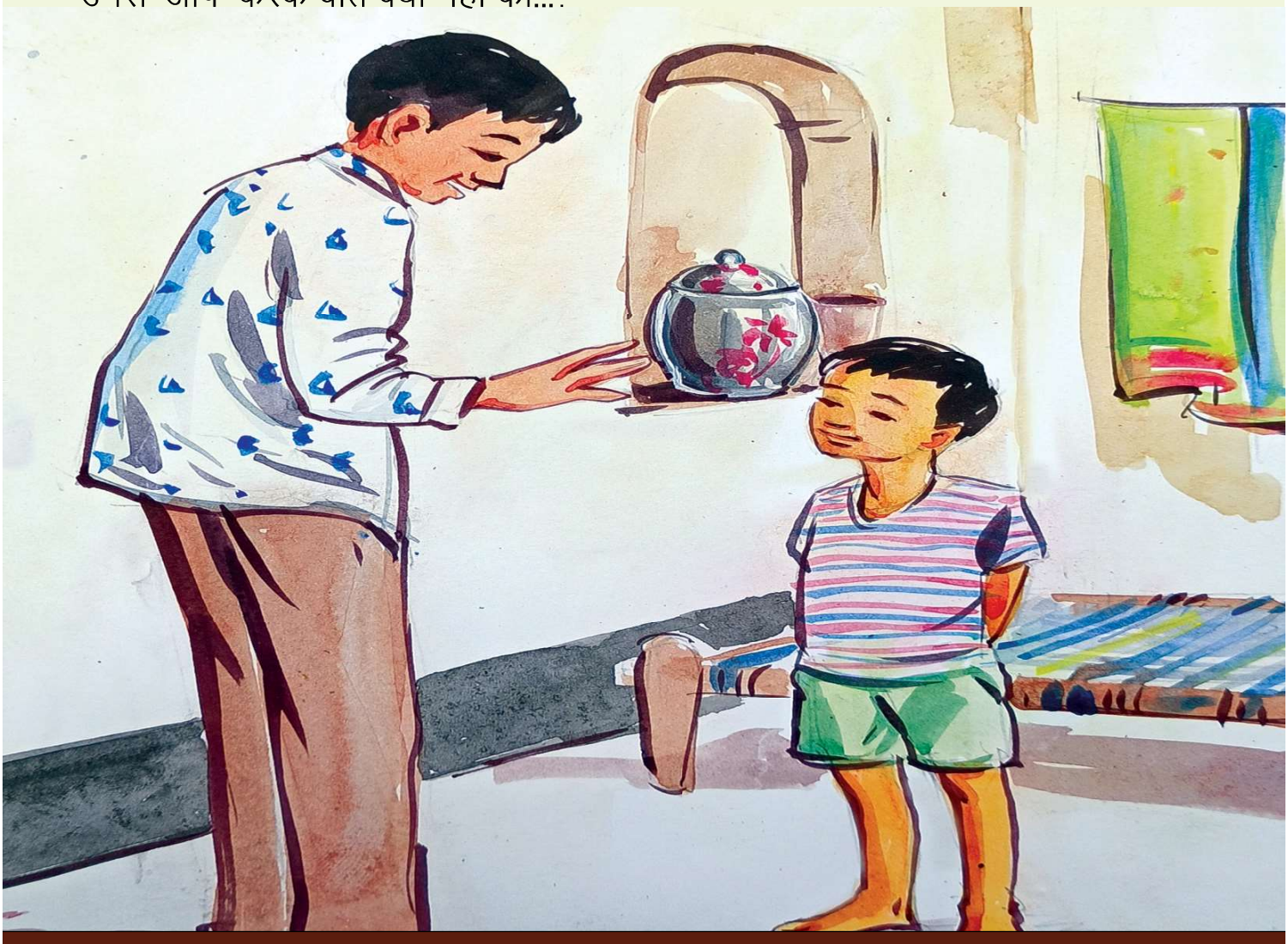

Writer : Nilutpal Biswas
Translation : Soumitra, Saira
Illustrator : Susanta Das

गुड़हल का पौधा

मैं एक बहुत सुंदर बग़ीचे में रहता था। एक दिन बग़ीचे के माली ने मुझे उखाड़ कर बाहर फेंक दिया। समर ने मुझे देखा। उसने मुझे अपने घर के बग़ीचे में लगा दिया। फिर खाने के लिए गोबर और पानी दिया। बहुत दिनों बाद मुझे अपनी पसंद का खाना मिला। वाह! क्या स्वाद था।

कभी–कभी मेरे पत्तों में कीड़े लग जाते। कीड़े मेरे पत्तों को खोखला कर सकते थे, लेकिन समर उन कीड़ों को निकालकर फेंक देता था।

अब समर मुझसे रोज़ मिलने आता है। वह मुझसे ढेर सारी बातें भी करता है।

कल मैं समर को अपना खिला हुआ पहला फूल दूँगा। मेरी डाली का ख़ूबसूरत फूल शायद उसे पसंद आए!

Writer : Malini Mukherjee Translation : Soumitra, Saira Illustrator : Susanta Das

चटनी

धनिए और लहसुन के बीजों के बीच बातें हो रही थी। धनिया बोला– दोस्त, हम एक दिन बड़े हो जाएँगे। लहसुन भी उसकी हाँ में हाँ मिलाई।

धनिया फिर बोला– फिर हमारा मालिक हमें तोड़कर घर ले जाएगा और खाने में इस्तेमाल करेगा। तभी लहसुन बोला– बिल्कुल! ठीक कहा तुमने। एक दादी रोज़ यहाँ आती हैं और हमें प्यार से देखती हैं।

हाँ, मैंने भी उन्हें देखा है। धनिया ने झट से कहा।

सुना है दादी को धनिया और लहसुन की चटनी बहुत अच्छी लगती है।

तभी लहसुन और धनिया की नज़र दादी पर पड़ी। वे दोनों एक साथ बोले– चटनी का मज़ा लेने दादी आ रही हैं!

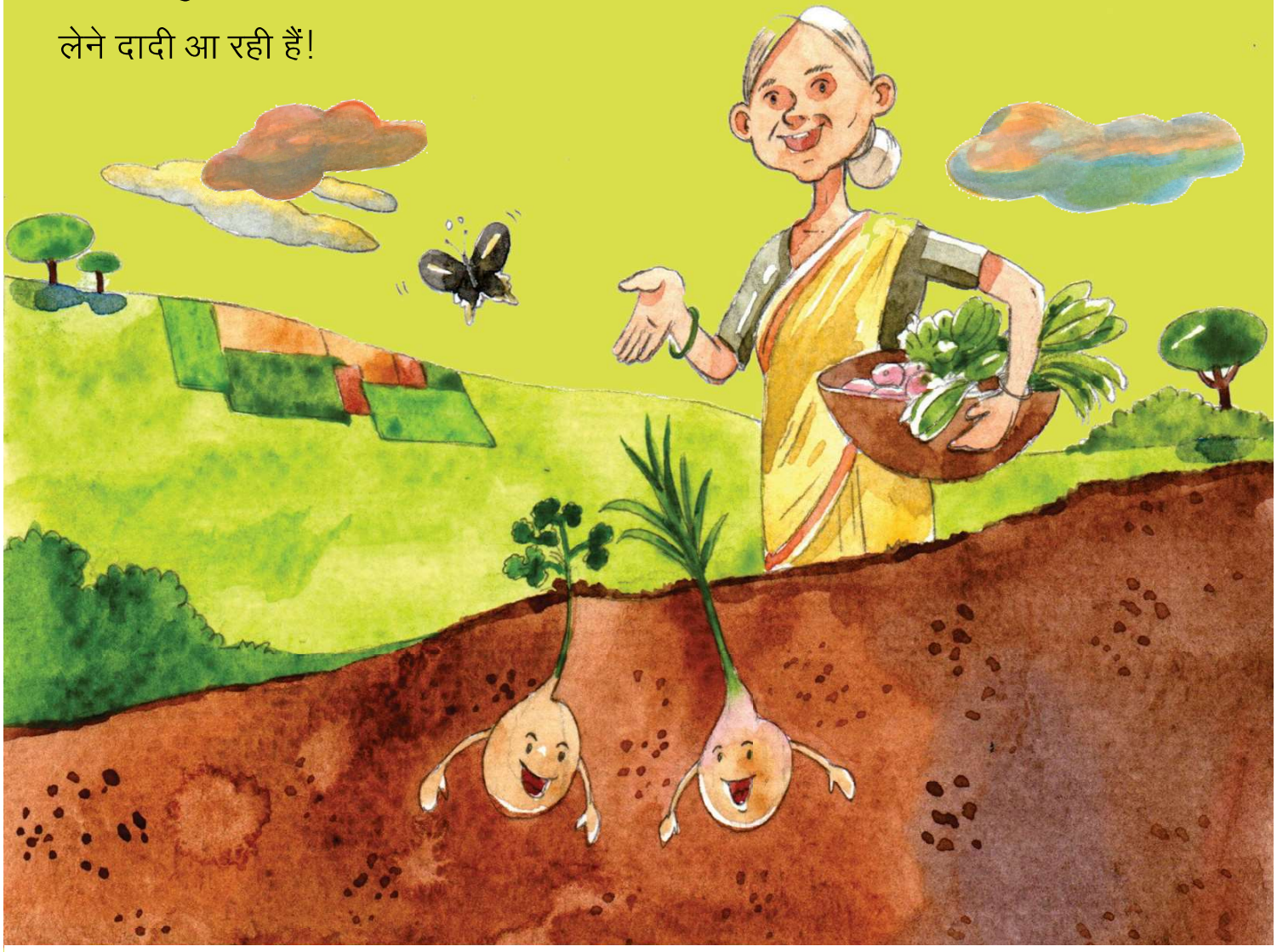

प्र.1 धनिया और लहसुन किस बारे में बातें कर रहे थे?

प्र.2 लहसुन और धनिए के क्या–क्या फ़ायदें हैं? लिखिए।

Writer : Komal

Illustrator : Shubham Lakhera